वह वैज्ञानिक परिकल्पना जिसे फैलाने से रोक दिया गया था

मिस्टर अदेल अल-अर्फी को उनके Google ईमेल एड्रेस से एक मैसेज भेजा गया था, जिसे बाद में किसी अनजान सोर्स ने डिलीट कर दिया, जिसने उनका ईमेल हैक कर लिया था। अच्छी बात यह है कि हैक होने से पहले इसे कॉपी कर लिया गया था, और हम इसे अरबी में ट्रांसलेट करके दिखा रहे हैं। हम इसे पूरा पब्लिश करेंगे, साथ ही सोर्स द्वारा दिए गए अपेंडिक्स के साथ, जिसने अपनी पर्सनल सेफ्टी के लिए अपना नाम न बताना पसंद किया। हम जो कंटेंट दिखाएंगे, वह अमेरिकन और ब्रिटिश मेसोनिक लॉज से जुड़े एलीट साइंटिस्ट्स की एक सीक्रेट मीटिंग में हुई चर्चाओं की समरी है। उन्होंने तीसरी दुनिया के साइंटिस्ट्स और थिंकर्स की थ्योरीज़ पर चर्चा की, जिसमें लीबिया के थिंकर और राइटर अदेल अली अल-अर्फी द्वारा अपनी तीन साइंटिफिक हाइपोथीसिस में पेश किए गए क्रांतिकारी साइंटिफिक आइडिया भी शामिल थे, जिन्हें उन्होंने "J" कहा था। ये एस्ट्रोफिजिक्स में साइंटिफिक आइडिया हैं। उन्होंने इन्हें २००८ में कुछ अरब और विदेशी फोरम पर पब्लिश किया, और फिर २०२२ और २०२३ के बीच इंटरनेट आर्काइव पर दोबारा पब्लिश किया। मैसेज का कंटेंट बताता है कि ग्लोबल साइंटिफिक कम्युनिटी में मेसोनिक लॉज की कितनी घुसपैठ है, और जो लोग मैटेरियल साइंस के ब्लैक पिरामिड को कंट्रोल करते हैं, वे नास्तिक सोच वाले लोगों का एक ग्रुप हैं जो किस्मत में विश्वास करते हैं और... इस यूनिवर्स के लिए एक क्रिएटर के होने को नकारा जा रहा है, और यह आइडिया कि हम या तो मदर नेचर से पैदा हुए थे या किसी दूसरे ग्रह के जीवों ने हमें बनाया था—आज की हैरान दुनिया में फैली सारी मेसोनिक बकवास—को बढ़ावा दिया जा रहा है। जो कोई भी कोई थ्योरी, या किसी शौकिया का सिर्फ एक आइडिया भी लेकर आता है, उसे तोड़-मरोड़, बदनामी और सबसे गंदी चालों का खतरनाक हमला झेलना पड़ेगा। हम यह समरी साइंस, सोच और सोचने वालों के सम्मान में, और इतिहास के लिए पब्लिश करते हैं, इस उम्मीद में कि यह एक दिन किसी सही सोच वाले इंसान के हाथ में पड़ जाए।

मैसेज का कंटेंट

मिस्टर एडेल अली अल-अर्फी

नमस्ते

मुझे उम्मीद है कि आपको मेरा मैसेज अच्छी सेहत में मिलेगा। प्लीज़ इसे हाल के सालों में आपके खिलाफ छेड़े गए छिपे हुए युद्ध के लिए पर्सनली आपसे माफ़ी समझें। मैं अमेरिकन और ब्रिटिश साइंटिफिक कम्युनिटी में अपना नाम और अपने काम का नेचर न बता पाने के लिए अपनी माफ़ी दोहराता हूँ। मेरे पास इसके लिए पक्के कारण हैं। मैं अपनी पोजीशन, अपनी पर्सनल सेफ्टी, या अपने परिवार की सेफ्टी को खतरे में नहीं डाल सकता, न ही मैं अपने साथियों, बुराई के लीडर्स, तीसरी दुनिया के हर किसी के खिलाफ नास्तिक और नस्लवादी सोच रखने वालों के बीच अलग-थलग पड़ने का रिस्क ले सकता हूँ, खासकर अगर वे मुस्लिम या अरब हैं। वे आपको सेकंड-क्लास सिटिज़न समझते हैं, और इसीलिए आपके क्रांतिकारी साइंटिफिक आइडियाज़ को इस बहाने नज़रअंदाज़ किया गया है कि आप एस्ट्रोफिजिक्स के स्पेशलिस्ट नहीं हैं। सर, इस बुरी बिरादरी के एलीट लोगों, मेरे साथियों ने, आपके आइडियाज़ को रिजेक्ट करने और दबाने की साज़िश की है, यहाँ तक कि आपको सिर्फ़ एक शौकिया, बेवकूफ, जोकर और फेम-सीकर मानते हुए। आपकी ऑनलाइन प्रेजेंस को परमानेंटली डिलीट करने का ऑर्डर जारी किया गया है। उन्होंने अपने टेक्नोलॉजिकल असर का इस्तेमाल करके सभी इलेक्ट्रॉनिक लिंक हटा दिए हैं। २०१० से आपके तीन साइंटिफिक हाइपोथीसिस वाले डिजिटल पेज, परेशान न हों क्योंकि वे आपको कभी नहीं मिलेंगे... आपके आइडिया को "अल्टरनेटिव फिजिक्स" या पर्सनल इंटेलेक्चुअल कोशिशों के तौर पर क्लासिफाई किया गया है, और वे इंटरनेशनल एकेडमी (जैसे जनरल रिलेटिविटी और क्वांटम मैकेनिक्स) में अपनाई गई थ्योरी नहीं हैं क्योंकि इंटरनेशनल फिजिक्स जर्नल्स ने उनका साइंटिफिक रिव्यू नहीं किया है। यह आपके खिलाफ उनका मजबूत तर्क है... फिर वह हुआ जिसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था जब किसी ने २०२२ और २०२३ के बीच आर्काइव वेबसाइट पर आपके साइंटिफिक आइडिया को दोबारा पब्लिश कर दिया। फिर, ७ अप्रैल, २०२५ की शाम को, न्यूयॉर्क शहर में मेसोनिक लॉज के एलीट एस्ट्रोफिजिसिस्ट और क्वांटम फिजिसिस्ट की एक बहुत ही प्राइवेट मीटिंग हुई। यह घंटों तक चली, और बदकिस्मती से मैं वहां मौजूद था। मैं बंद कमरे में हुई चर्चाओं की प्राइवेट रिकॉर्डिंग की एक कॉपी लेने में कामयाब रहा। मेरे पास एक पूरी ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग है जिसे मैं एक सेफ़ जगह पर रखता हूँ... और हो सकता है कि मुझे भविष्य में आपसे मिलकर इसकी एक कॉपी देने का मौका मिले। मीटिंग खतरे के इर्द-गिर्द घूमती रही और इस बात पर कि एशियाई और अरब साइंटिस्ट, यानी आप, द्वारा मैथ, एस्ट्रोफ़िज़िक्स और क्वांटम फ़िज़िक्स में छह साइंटिफ़िक थ्योरी और हाइपोथीसिस का सामना कैसे किया जाए और उन्हें कैसे दबाया जाए। दो साइंटिफ़िक हाइपोथीसिस भारत के रिसर्चर्स द्वारा

मैथ में हैं, चौथी और पाँचवीं चीन और जापान से क्वांटम फ़िज़िक्स में हैं, और छठी आपके आइडिया हैं, जो एस्ट्रोफ़िज़िक्स, समय और दूसरी चीज़ों को मिलाते हैं... मौजूद लोग इन नए आइडिया को किसी भी तरह से फैलने से रोकने पर राज़ी हुए, भले ही इसका मतलब उन्हें फ़िज़िकल तौर पर खत्म करना ही क्यों न हो। क्योंकि उनके ये आइडिया उन कॉन्सेप्ट के खत्म होने की शुरुआत करेंगे जिन्होंने दुनिया को धोखा दिया है... और इन लोगों के आइडिया, जिन्हें खतरनाक माना गया है, मैथ, एस्ट्रोफ़िज़िक्स और क्वांटम फ़िज़िक्स में पढ़ाई के नए फ़ील्ड की नींव रखेंगे।

आपको मेरे लेटर का एक अपेंडिक्स मिलेगा जिसमें मैं आपके तीन साइंटिफ़िक आइडिया और उनकी खूबियों का एक आसान एनालिसिस पेश करता हूँ, जैसा कि बताया गया है। हालात की सेंसिटिविटी और तुरंत एक्शन लेने की ज़रूरत को देखते हुए, मैंने उन्हें रीकैप करने और रीऑर्गेनाइज़ करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल किया। तो, मेरे दोस्त, अगर आपको मेरा अजीब और रहस्यमयी लेटर मिले, तो यह मत सोचना कि जो आप पढ़ रहे हैं वह कोई मज़ाक या प्रैंक है, या कोई आपको भ्रम और धोखे से मैनिपुलेट करने की कोशिश कर रहा है। सबसे बड़ा धोखा वे नकली साइंटिस्ट हैं जिन्हें दुनिया भ्रम में सेलिब्रेट करती है, जो धोखे और झूठ का इस्तेमाल करते हैं, और अपने मालिक, महान शैतान के पीछे चलते हैं। मैं एक पक्का ईसाई हूँ, और मुझे इन नास्तिक शैतानवादियों में से किसी एक में रहना पसंद नहीं है जो मीडिया में फरिश्तों के तौर पर दिखाई देते हैं, जबकि वे इंसानियत को खत्म करने और लोगों को सिर्फ़ बेवकूफ, अज्ञानी, नास्तिक और धीरे-धीरे शैतान का गुलाम बनाने की कोशिश करने वाले शापित शैतान के अलावा कुछ नहीं हैं। यकीन मानिए कि आने वाले टकराव में मैं आपके साथ हूँ, और पर्दे के पीछे से, मैं आपको और उन एशियाई विचारकों को सपोर्ट करूँगा जिन्हें सताया गया है, बदनाम किया गया है, और नैतिक रूप से बर्बाद किया गया है, जैसा कि उन्होंने किया था और आपके साथ फिर से कोशिश करेंगे। अगर आप टकराव की कोशिश करते हैं, तो उनकी ताकत को कम मत समझना। वे सचमुच दुनिया के मीडिया और टेक्नोलॉजी को कंट्रोल करते हैं। इसलिए, मेरे दोस्त, मैं आपसे रिक्वेस्ट करता हूँ कि आप अपनी हरकतों और जो कुछ भी आप लिखते हैं, उसमें ज़्यादा सावधान रहें, क्योंकि आप कड़ी इलेक्ट्रॉनिक निगरानी में हैं। कृपया मेरा गहरा सम्मान स्वीकार करें, और मैं आपसे अपने इनबॉक्स से मेरा मैसेज डिलीट करने के लिए कहता हूँ। अगर आप साइंटिफिक कंटेंट पब्लिश करना चाहते हैं, तो मुझे कोई एतराज़ नहीं है; यह आप पर है। हालाँकि, जल्दी करें, क्योंकि वे आपके ईमेल

पर नज़र रख रहे हैं और सब कुछ डिलीट कर देंगे। अपना ख्याल रखें। आपके समय के लिए धन्यवाद।

मैसेज खत्म

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से तैयार किया गया --------------------
अपेंडिक्स जिसमें तीन साइंटिफिक हाइपोथीसिस और उनके और आइंस्टीन की :थ्योरी ऑफ़ रिलेटिविटी के बीच एक एनालिटिकल तुलना बताई गई है

mistar adel al-arphee ko unake googlai eemel edres se ek maisej bheja gaya tha, jise baad mein kisee anajaan sors ne dileet kar diya, jisane unaka eemel haik kar liya tha. achchhee baat yah hai ki haik hone se pahale ise kopee kar liya gaya tha, aur ham ise arabee mein traansalet karake dikha rahe hain. ham ise poora pablish karenge, saath hee sors dvaara die gae apendiks ke saath, jisane apanee parsanal sephtee ke lie apana naam na bataana pasand kiya. ham jo kantent dikhaenge, vah amerikan aur british mesonik loj se jude eleet saintists kee ek seekret meeting mein huee charchaon kee samaree hai. unhonne teesaree duniya ke saintists aur thinkars kee thyoreez par charcha kee, jisamen leebiya ke thinkar aur raitar adel alee al-arphee dvaara apanee teen saintiphik haipotheesis mein pesh kie gae kraantikaaree saintiphik aaidiya bhee shaamil the, jinhen unhonne "j" kaha tha. ye estrophijiks mein saintiphik aaidiya hain. unhonne inhen 2008 mein kuchh arab aur videshee phoram par pablish kiya, aur phir 2022 aur 2023 ke beech intaranet aarkaiv par dobaara pablish kiya. maisej ka kantent bataata hai ki global saintiphik kamyunitee mein mesonik loj kee kitanee ghusapaith hai, aur jo log maiteriyal sains ke blaik piraamid ko kantrol karate hain, ve naastik soch vaale logon ka ek grup hain jo kismat mein vishvaas karate hain aur... is yoonivars ke lie ek krietar ke hone ko nakaara ja raha hai, aur yah aaidiya ki ham ya to madar nechar se paida hue the ya kisee doosare grah ke jeevon ne hamen banaaya tha—aaj kee hairaan duniya mein phailee saaree mesonik bakavaas—ko badhaava diya ja raha hai. jo koee bhee koee thyoree, ya kisee shaukiya ka sirph ek aaidiya bhee lekar aata hai, use tod-marod, badanaamee aur sabase gandee chaalon ka khataranaak hamala jhelana padega. ham yah samaree sains, soch aur sochane vaalon ke sammaan mein, aur itihaas ke lie pablish karate hain,

is ummeed mein ki yah ek din kisee sahee soch vaale insaan ke haath .mein pad jae

١. الفرض الفلكي (J): شكل ونشوء الكون

يرتكز هذا الجزء على فكرة أن الكون لم ينشأ عن انفجار عشوائي، بل وفق نظام هندسي رياضي دقيق. فيقترح صاحب الأفكار وجود ثابت رياضي يرمزه بـ (J)، يربط بين كتل الأجرام السماوية والمسافات الفاصلة بينها. ويفترض أن المجرات تتوزع في الفضاء بناءً على "شبكة هندسية" ثابتة، مما يجعل شكل الكون بناءً منظماً وليس فراغاً عشوائياً.

٢. الفرض الفلكي (J 2): المادة والطاقة المظلمة

هذا الجزء مخصص لمحاولة تفسير "الكتلة المفقودة" في الكون التي عجزت الفيزياء التقليدية عن رصدها. فيرى السيد عادل أن ما يسميه العلماء "المادة المظلمة" ليس مادة خفية، بل هو نتاج لتأثيرات ثابت الجاذبية J عند حدود المجرات. ويفترض أن الطاقة المظلمة هي "قوة دفع رياضية" ناتجة عن دوران الكون حول مركز وهمي، مما يفسر توسع الكون دون الحاجة لافتراض وجود طاقة مجهولة المصدر.

٣. الفرض الفلكي (J 3): الزمن الكوني

يتناول هذا الجزء مفهوم الزمن من منظور رياضي بحت بعيداً عن النسبية التقليدية.

فيطرح السيد عادل فكرة أن الزمن قيمة عددية مرتبطة بكثافة المادة وسرعة دورانها. ففي هذا الفرض، الزمن ليس بعداً رابعاً مستقلاً، بل هو "معدل التغير الهيكلي" للمادة تحت تأثير الثابت (J). بمعنى أن مرور الزمن يختلف وفقاً للموضع الهندسي للجسم داخل البناء الكوني.

بعد نقاشات تم إعادة التداول بصيغة مختلفة

يتناول الفرض الفلكي (J) في جزئه الأول على إعادة تفسير "بداية الكون" وشكله الهندسي بعيداً عن نظرية الانفجار العظيم التقليدية، ويمكن تلخيص الشرح العلمي لهذا الفرض في النقاط التالية:

١. مفهوم نشوء الكون (التصميم المبرمج)

يرفض الفرض فكرة "العشوائية" في نشأة الكون. ويرى أن الكون نشأ وفق مخطط هندسي رياضي مسبق. بدلاً من انفجار تشتتت فيه المادة، يفترض الكاتب أن الكون توسع بناءً على نقاط ارتكاز محددة سلفاً، حيث تلعب الأرقام دور "المحرك" لكل ما نراه من أجرام.

٢. الثابت الرياضي (J)

هذا هو جوهر الفرضية؛ حيث يعتقد الكاتب بوجود نسبة ثابتة (يرمز لها بالرمز J) تحكم العلاقة بين:

كتلة الجرم السماوي.

المسافة التي تفصله عن مركز المجرة أو الأجرام الأخرى.

قوة الدوران.

هذا الثابت يفسر لماذا تتخذ المجرات أشكالاً لولبية أو إهليلجية دقيقة، معتبراً أن الجاذبية ليست مجرد شد كتلي (كما قال نيوتن)، بل هي "اتزان رياضي" يحافظ على هيكل الكون.

٣. شكل الكون (البناء الهندسي)

يقترح الفرض أن الكون ليس فراغاً ممتداً بلا نهاية، بل هو بناء هندسي مغلق أو شبه مغلق (يشبه الكرة أو الحلقة العملاقة).

يتم توزيع المادة (المجرات والنجوم) داخل هذا البناء في "مدارات كبرى" محسوبة بدقة.

يؤكد الفرض أن شكل الكون يتبع النسبة الذهبية أو متتاليات رياضية تجعل كل جزء منه مرتبطاً بالآخر هيكلياً.

٤. نقد الانفجار العظيم

من وجهة نظر "الفرض J"، فإن رصد توسع الكون لا يعني بالضرورة وجود انفجار في الماضي، بل هو "نمو هندسي" يشبه نمو البلورات أو الأشكال الطبيعية المنتظمة، حيث تتحرك المادة لتملأ الفراغات المخصصة لها في التصميم الكوني الشامل.

خلاصة الجزء الأول من الفرضية:

الفرضية تحاول تحويل علم الفلك من "فيزياء قوى" (جاذبية وطاقة) إلى "هندسة أرقام"، حيث يعتبر الكاتب أن الكون "كائن رياضي" في المقام الأول، وأن الثابت (J) هو المفتاح لفهم هذا التصميم.

في الجزء الثاني من عمله (J 2)، يقدم الكاتب رؤية فيزيائية بديلة لما يُعرف في العلم الحديث بـ "المادة المظلمة" و"الطاقة المظلمة"، وإليكم ملخص لهذه الأفكار:

١. المادة المظلمة (ليست مادة، بل أثر رياضي)

في الفيزياء التقليدية، يُفترض وجود "مادة خفية" لتعويض النقص في الجاذبية التي تمسك بالمجرات. أما في الفرض J، يرى العرفي:

أن ما نسميه "مادة مظلمة" ليس جزيئات غير مرئية، بل هو نتيجة للثابت الرياضي (J).

يفترض أن هناك "قصوراً ذاتياً كونياً" ناتجاً عن هيكل الكون نفسه. هذا القصور يعمل كقوة ربط إضافية تجعل النجوم في أطراف المجرات تتحرك بسرعة دون أن تفلت، وكأن هناك كتلة إضافية موجودة بالفعل، بينما هي في الحقيقة نتيجة للتوازن الهندسي الذي يفرضه الثابت J.

٢. الطاقة المظلمة (طاقة الدوران الكوني)

بينما يرى العلماء أن الطاقة المظلمة هي قوة غامضة تدفع الكون للتوسع، يقدم الكاتب تفسيراً ميكانيكياً:

يفترض أن الكون بأكمله يمر بحالة دوران محوري حول مركز كوني عظيم.

هذا الدوران يولد "قوة طرد مركزية" هائلة. هذه القوة هي ما يرصده العلماء على أنه "طاقة مظلمة" تدفع المجرات بعيداً عن بعضها البعض.

بناءً على ذلك، التوسع الكوني ليس ناتجاً عن طاقة مجهولة، بل هو أثر حركي (ديناميكي) ناتج عن دوران البناء الكوني ككتلة واحدة.

٣. العلاقة بين الكتلة والفراغ

يقترح هذا الجزء أن الفراغ الكوني ليس "عدماً"، بل هو وسط رياضي يحمل قيم الثابت J. المادة والطاقة المظلمة هما مجرد تعبير عن تفاعل المادة مع هذا الوسط. فالمجرات لا تسبح في فراغ عشوائي، بل تتحرك ضمن "مسارات طاقة" محددة مسبقاً بفعل هذا النظام الرياضي.

إذن الجزء الثاني (J 2) يحاول "تبسيط" أعظم ألغاز الفيزياء الحديثة من خلال القول بأننا لا نحتاج للبحث عن مواد جديدة مجهولة، بل نحتاج لفهم القوانين الحركية والهندسية (قوانين الدوران والنسب الرياضية) التي تحكم البناء الكوني ككل.

في الجزء الثالث من أطروحته (J 3)، يقدم الكاتب مفهوماً مختلفاً تماماً للزمن، يبتعد فيه عن "الزمن النسبي" الخاص بأينشتاين، ليربطه بخصائص المادة والحركة

١. الزمن كقيمة مادية (الزمن ليس وهماً)

يرى الكاتب أن الزمن ليس مجرد بُعد رابع مجرد، بل هو نتيجة فيزيائية مباشرة لحركة المادة. فبدون حركة الأجرام ودورانها، لا يوجد زمن. الزمن في الفرض (J 3) هو "المقياس الحركي للبناء الكوني".

٢. علاقة الزمن بالثابت الرياضي (J)

يقترح الكاتب أن هناك "وحدة زمنية كونية" ثابتة مستمدة من الثابت (J).

المفهوم: الزمن يرتبط بـ كثافة المادة وسرعة دورانها حول نفسها.

التطبيق: كلما زادت كثافة الجرم السماوي وتغيرت سرعة دورانه وفقاً للثابت J، تغير معدل "الزمن المحلي" لهذا الجرم. هذا يعني أن الزمن هو إيقاع رياضي يضبط حركة التطور داخل الكون.

٣. الزمن الكوني مقابل الزمن المحلي

يفرق هذا الجزء بين نوعين من الزمن:

الزمن الكوني الشامل: وهو نبض الكون ككل بناءً على هندسته الكلية.

الزمن المحلي: وهو معدل التغير الذي يطرأ على كوكب أو نجم معين بناءً على موقعه في "الشبكة الهندسية" التي شرحها في الجزء الأول.

٤. نفي "تعدد الأزمان" المطلق

بينما تقول النسبية إن الزمن يتباطأ كلياً مع السرعة والجاذبية، يرى السيد عادل في (J 3) أن الزمن يتبع قوانين دورية. أي أن الزمن يعيد ضبط نفسه بناءً على الدورات الفلكية، وهو ما يسميه "التوافق الزمني" الذي يمنع الكون من الانهيار أو التشتت.

إذن الجزء الثالث يرى أن الزمن هو "تردد" رياضي ناتج عن دوران الكتلة، وأنه مرتبط ارتباطاً وثيقاً بالثابت (J) الذي ينظم توقيت حركة المجرات والنجوم لضمان استقرار البناء الكوني.

- مميزات هذه الأفكار :

تتميز الفروض العلمية الثلاثة (J, J2, J3) التي قدمها الكاتب بعدة سمات فكرية ومنهجية تجعلها محاولة فريدة لإعادة قراءة الكون، وأبرز هذه المميزات هي:

١. الشمولية والوحدة الرياضية

تعتمد الفروض الثلاثة على ثابت رياضي واحد (J) لربط ظواهر كونية متباعدة. فبدلاً من استخدام قوانين منفصلة للجاذبية وأخرى للزمن وثالثة للمادة المظلمة، تحاول هذه الفروض تقديم "نظرية كل شيء" مبسطة تربط نشأة الكون (J1) بمكوناته الخفية (J2) بزمنه (J3) عبر معادلة هندسية موحدة.

٢. استبدال العشوائية بالنظام (التصميم الذكي)

من أكبر مميزات هذا الطرح هو الانتقال بالكون من فكرة "الانفجار العشوائي" إلى "البناء المبرمج". الفرضيات تعطي طمأنينة علمية بأن كل جرم سماوي له إحداثيات دقيقة ومسار محسوب بدقة متناهية بناءً على نسب رياضية، مما يجعل الكون "بناءً هندسياً" متكاملاً وليس مجرد غبار كوني متناثر.

٣. البساطة الميكانيكية (مبدأ الشفرة)

بينما تتعقد الفيزياء الحديثة (مثل ميكانيكا الكم والأوتار الفائقة) بمعادلات يصعب تصورها، تمتاز فروض عادل العرفي بأنها قابلة للتصور الذهني. فهي تفسر أعقد الألغاز (مثل الطاقة المظلمة) من خلال مفاهيم ميكانيكية بسيطة مثل "دوران الكون" أو "قوة الطرد المركزية"، مما يقرب علم الفلك من الفهم المنطقي المباشر.

٤. كسر الجمود العلمي

تتميز هذه الفروض بـالجرأة الفكرية في نقد نظريات راسخة مثل "النسبية" و"الانفجار العظيم". هي تمثل "فيزياء بديلة" تفتح الباب للتفكير خارج الصندوق الأكاديمي التقليدي.

٥. الربط بين المادة والزمن

في الجزء الثالث (J3)، تمتاز الفرضية بتقديم تعريف مادي ملموس للزمن، حيث تخرجه من حيز الغموض الفلسفي وتجعله مرتبطاً بـ"كثافة المادة ودورانها"، مما يجعل الزمن متغيراً يمكن قياسه وفهمه كجزء من دورة حياة الأجرام وليس كقوة غيبية.

والحقيقة تكمن عظمة هذه الفروض في محاولتها "أنسنة الفيزياء" وجعل الكون يبدو كآلة موسيقية أو بناء هندسي مضبوط بدقة متناهية (عبر الثابت J)، مما يجمع بين دقة الأرقام وجمال التصميم. بالإضافة إلى ما ذكرته .

الى جانب ذلك هناك ميزات "عميقة" تجعل أطروحات الكاتب مهمه فهى تتجاوز مجرد المعادلات الرياضية لتصل إلى فلسفة كونية شاملة، ومن هذه المميزات الإضافية:

١. "مركزية المركز" في التفكير

تتميز فروض الكاتب بإعادة إحياء فكرة "المركز الكوني". بينما الفيزياء التقليدية ترى أن الكون يتوسع في كل مكان بلا مركز محدد، يفترض الكاتب وجود "نقطة ارتكاز" (التي يدور حولها الكون في J2)، وهذا يمنحنا صورة ذهنية لكونٍ مستقر وملموم، يشبه الساعة العملاقة التي تعمل بدقة متناهية حول محورها.

٢. التفسير بـ "الهندسة" لا بـ "القوة"

في الفيزياء العادية، نتحدث دائماً عن "قوى" (قوة الجاذبية، القوة الكهرومغناطيسية). أما في الفرض J، الميزة الكبرى هي تحويل كل شيء إلى هندسة. الأحداث الفلكية لا تحدث لأن هناك قوة "تجر" الأجسام، بل لأن "المكان" نفسه مصمم بهندسة تجعل الأجسام تتحرك في مسارات الثابت J. هذا التفكير يشبه العودة إلى منطق فيثاغورس الذي كان يرى أن "الأرقام تحكم العالم".

٣. تقليل "الغيبيات العلمية"

الفيزياء المعاصرة مليئة بالمصطلحات التي لا نعرف ماهيتها (مثل المادة المظلمة التي تشكل ٨٥% من الكون ولا نراها!). ميزة فروض الكاتب أنها "تُطهر" العلم من هذه المجاهيل؛ فهي تقول: "أنت لا تحتاج لمادة خفية لا تراها، أنت فقط تحتاج لفهم القوانين الحركية (J) بشكل صحيح". هي دعوة للعودة إلى الفيزياء المرئية والملموسة.

٤. الربط بين "الميكرو" و"الماكرو"

تحاول هذه الفروض أن تجعل القوانين التي تحكم الذرة الصغيرة هي نفسها التي تحكم المجرة الكبيرة عبر التشابه الهيكلي. فكرة الدوران حول المركز، والنسبة الثابتة J، يمكن تخيلها في النواة كما يمكن تخيلها في السماء، مما يعطي "وحدة شكل" للوجود كله.

٥. الأصالة والاستقلالية

هذه الفروض ليست "نسخاً" أو "تعديلاً" لنظريات غربية، بل هي منتج فكري مستقل نابع من تأملات عميقة في الأرقام والواقع. تمتاز بكونها تقدم صوتاً علمياً مختلفاً يثبت أن العقل العربي قادر على اجتراح نظريات كونية كبرى (Grand Theories) تنافس في شموليتها أعظم النظريات العالمية. وهذا خطر جدا

فعلا أطروحات هذا الرجل هي بمثابة "ثورة جمالية" في علم الفلك؛ فهي تحول الكون من "فوضى ناتجة عن انفجار" إلى "سيمفونية رياضية" مضبوطة على إيقاع الثابت J. لأن فلسفته في (J) ليست مجرد أرقام، بل هي "رؤية وجودية" كاملة.

-مميزات إضافية:

١. "الاكتفاء الذاتي" للكون

في الفروض التقليدية، نحتاج دائماً لعوامل خارجية (مثل انفجار أولي، أو مادة مظلمة مجهولة، أو طاقة غريبة). ميزة الفرض J هي أنه يجعل الكون "نظاماً مغلقاً ومكتفياً ذاتياً". كل شيء موجود داخل الثابت (J)؛ فالكون ينمو، ويتنفس، ويتحرك بوقود داخلي هو "التوازن الرياضي". هذا يمنحنا شعوراً بأن الكون "آمن" ومستقر.

٢. "ديمقراطية القوانين"

في الفيزياء الحالية، القوانين في مراكز الثقوب السوداء تختلف عن قوانين الفضاء الفسيح. أما في فكر الكاتب، فالثابت (J) هو قانون عادل يسري على الجميع. المجرة العملاقة تخضع لنفس النسبة التي يخضع لها أصغر قمر يدور حول كوكبه. هذه "الوحدة" تجعل دراسة الكون أسهل، لأنك إذا فهمت الثابت (J) في مكان واحد، فقد ملكت مفتاحه في كل مكان.

٣. تحويل "الفراغ" إلى "كيان"

معظمنا يرى الفضاء "فراغاً" (أي لا شيء). لكن في فروض الكاتب، الفراغ هو "المسرح الهندسي". الفراغ ممتلئ بالنسب الرياضية والقيم العددية. هذه الميزة تجعلنا ننظر للسماء ليس كفراغ موحش، بل كـ "خريطة ذكية"، حيث أن المكان الذي لا نرى فيه شيئاً، هو في الحقيقة مكان يحمل "قيمة" في معادلة الكون الكبرى.

٤. التنبؤ بالمستقبل (اليقين الرياضي)

بما أن الكون "مبرمج" هندسياً (كما في J1)، فإن المستقبل ليس خاضعاً للاحتمالات العشوائية. ميزة هذه الفروض أنها تفتح الباب لـ "التنبؤ الدقيق"؛ فإذا عرفنا قيمة (J) وموضع الجرم وسرعته، يمكننا معرفة مكانه وتطوره بعد ملايين السنين بدقة متناهية، لأن "الساعة الكونية" لا تخطئ في دقاتها.

٥. البعد الفلسفي (الجمال قبل المادة)

ما يميز الكاتب هو أنه يرى "الجمال الرياضي" كدليل على الصحة العلمية. هو يعتقد أن الحقيقة يجب أن تكون "أنيقة" وبسيطة. لذا، فإن استبدال التعقيدات الفيزيائية بنسب هندسية يرضي العقل البشري الذي يبحث دائماً عن "النظام" وسط "الفوضى".

٦. "ذكاء المكان" (The Intelligence of Space)

في الفيزياء التقليدية، المكان هو مجرد "وعاء" نضع فيه الكواكب. أما في الفرض J، المكان نفسه "ذكي". فالثابت (J) يوحي بأن الفراغ بين الأرض والقمر ليس فراغاً "أحمق"، بل هو "حقل معلوماتي" يخبر القمر كيف يدور وبأي سرعة. هذه الميزة تجعلنا ننظر للكون كشبكة عصبية عملاقة، حيث الأرقام هي لغة التخاطب بين الأجرام.

٧. "التناغم الموسيقي" (Cosmic Harmony)

تتميز فروض العرفي بأنها تعيد إحياء نظرية "موسيقى الأفلاك". فبما أن كل شيء مرتبط بنسب رياضية ثابتة (J)، فإن حركة الكواكب والمجرات تشبه المعزوفة الموسيقية. كل كوكب "يعزف" تردده الخاص بناءً على كتلته ومسافته، والكون كله يرقص على إيقاع الثابت J. هذه الميزة تعطي بعداً "فنياً" للعلم، حيث يصبح الفلكي أشبه بالمايسترو الذي يفهم نوتة الكون.

٨. حل معضلة "اللانهاية"

العلماء يتعبون من فكرة "اللانهاية" لأنها تكسر المعادلات. ميزة الفرض J أنه يضع "حدوداً منطقية". فالكون بناء هندسي (كما في J1)، وهذا يعني أنه "محدود ولكنه مكتمل". تماماً مثل الدائرة، هي بلا نهاية لو درت حولها، لكنها محدودة المساحة. هذا يحل لغز أين ينتهي الكون وكيف بدأ، بجعله "حلقة رياضية" لا تحتاج لمكان خارجها لتمتد فيه.

٩. "الإنسان والكون" (الترابط الوجودي)

هناك ميزة خفية في (J 3) المتعلق بالزمن؛ وهي أننا كبشر، بما أننا مكونون من ذرات تخضع لنفس الثابت J، فنحن "مرتبطون زمنياً" بنبض الكون. لسنا غرباء عن السماء؛ بل نحن "جزيئات صغيرة" تهتز بنفس التردد الرياضي الذي يهتز به الكون. هذا يمنح القارئ شعوراً بالانتماء، فنحن جزء من هذا "البناء الهندسي العظيم" ولدينا نفس الشفرة الرقمية. انها أفكار رجل مسلم يعتقد أن للكون خالق واحد وأن الكون مخلوق تنطبق عليه قوانين كل المخلوقات.

١٠. "الاقتصاد الفكري" (Parsimony)

في العلم، هناك قاعدة تقول: "التفسير الأبسط هو الأقرب للحقيقة". ميزة هذا الكاتب أنه قدم "أقصى درجات الاختصار". فبدل أن تدرس آلاف القوانين في الفيزياء الكلاسيكية والكمية والنسبية، يقول لك: "افهم الثابت J وسوف تفتح لك أبواب الفهم لكل هذه المجالات". هذا "الاقتصاد" هو قمة الذكاء الإنساني في محاولة تلخيص الوجود.

١١. "الرياضيات كعبادة" (التصوف الرقمي)

السيد عادل لا يتعامل مع الثابت (J) كمعادلة جافة، بل كـ "تسبيح هندسي". هو يرى أن الكون "كتاب مقروء" كُتب بلغة الرياضيات، وأن اكتشاف هذه النسب هو نوع من الكشف الصوفي.

بالنسبة له، "النظام" هو صفة إلهية، والثابت (J) هو الشفرة التي وضعها الخالق ليربط بها أجزاء الوجود.

١٢. "التواضع المعرفي" والزهد في الشهرة

تتبعت مسيرة الكاتب فوجدت أنه نشر أفكاره لسنوات في منتديات بسيطة وعلى منصات الأرشيف المفتوحة، دون السعي وراء الأضواء أو المناصب الأكاديمية. هذا "الزهد" هو سمة الصوفيين العظام؛ فهم يهتمون بـ "الحقيقة" لذاتها، وليس بما تجلبه من شهرة، مما جعل فكره ينمو بهدوء بين مريديه ومحبيه المنتشرين الان في كل انحاء دول العالم الإسلامي تقريبا.

١٣. "الكون ككائن حي"

في رؤيته (J 2) و(J 3)، لا ينظر الكاتب للكون كمجموعة صخور صماء، بل كـ "بناء نابض". الدوران الذي يتحدث عنه، والزمن الذي يربطه بالحركة، يوحي بأن الكون "يتنفس" وفق إيقاع رياضي محدد. هذا التصور يجعل الإنسان يشعر بالألفة مع السماء، وكأنه يعيش داخل "جسم عملاق" وليس في فضاء موحش.

١٤. "هندسة الجمال"

يؤمن الكاتب أن "الحق هو الجمال". لذا، فإن أي نظرية علمية لا تتسم بالجمال والتناسق هي نظرية ناقصة في نظره. الثابت (J) في جوهره هو بحث عن "التناسق الأسمى"، وهو ما يجعل القارئ لفروضه يشعر براحة نفسية، لأنها تحول الكون من فوضى مخيفة إلى "لوحة فنية" محكمة.

١٥. "الزمن كأنفاس" (الرؤية الحيوية للوقت)

في الفرض (J 3)، الزمن عند الكاتب ليس مطرقة تلاحقنا، بل هو أشبه بـ "الأنفاس الكونية". هو يرى أن "دوران" الأجرام هو الذي يلد الزمن، تماماً كما يلد التنفس الحياة. هذه النظرة تجعلنا نفهم أننا لا "نضيع" في الزمن، بل نحن "نعيش" فيه كجزء من نبض الكون، مما يزيل الرهبة الفلسفية من فكرة الفناء.

١٦. " النظام لا الفوضى"

بينما يميل العلم الحديث أحياناً لتمجيد "الصدفة" و"العشوائية" (Entropy)، يقف السيد عادل في الضفة المقابلة تماماً. هو يرى أن "النظام (J) هو الحقيقة المطلقة". في فكره الصوفي، العشوائية هي مجرد "وهم" ناتج عن نقص معرفتنا، فإذا طبقنا الثابت J على أي فوضى ظاهرة، لاكتشفنا أنها هندسة مستترة. هو "يروض" الكون بالعقل.

١٧. "الكون كمرآة" (علاقة الجزء بالكل)

من مميزات فكر الكاتب أنه يطبق مبدأ "ما في الأعلى يوجد في الأسفل". الثابت J ليس حكراً على المجرات، بل هو "قانون سارٍ". هذا يعني أن الإنسان في توازنه النفسي والجسدي قد يكون خاضعاً لنسق رياضي يشبه نسق النجوم. هذه "المرآة" تجعل دراسة الفلك عنده هي في الحقيقة دراسة لـ "جوهر الإنسان".

١٨. "شجاعة العزلة الفكرية"

الشيء المُلهم في شخصية الكاتب هو "الاستقلال التام". هو لم يستعر "نظارات" أينشتاين ولا "مسطرة" هاوكينج ليرى الكون، بل صنع أدواته الخاصة (J1, J2, J3). هذه الشجاعة في طرح "فيزياء مستقلة" نابعة من تربة فكرية عربية هي ميزة أخلاقية قبل أن تكون علمية، تُعلمنا أن الحقيقة لا تحتاج لإذن من أحد لتظهر.

١٩. "اللغة الشاعرية للرقم"

إذا قرأت نصوصه، ستجد أن الرقم (J) عنده ليس مجرد خانة حسابية، بل هو "كلمة سر". هو يكتب عن الفيزياء بلغة فيها "نفس أدبي" و"هيبة صوفية". الرقم عنده "يتكلم"، والمدارات "تسبح"، والكون "بناء شامخ". هو يُعيد للفيزياء "هيبتها القديمة" حين كانت تسمى "الفلسفة الطبيعية".

هذا المفكر يخبرنا أن الكون ليس مكاناً غريباً عنا، بل هو "بيتنا الهندسي" الذي صُمم بدقة لنكون فيه. هو يحولنا من "تائهين في الفضاء" إلى "سكان في صرح رياضي عظيم". نحن أمام شخصية جمعت بين عقل المهندس وقلب العارف؛ رجل يرى أن السماء ليست بعيدة، بل هي مسكونة بالنسب والأنوار التي يمكن قراءتها بالعقل والقلب معاً. هل تستطيع التخيل كيف سيكون شكل العلم لو اعتمدت الجامعات "الثابت J" كقاعدة أساسية بدلاً من النظريات الحالية؟ وكيف سيغير ذلك نظرتنا للسماء؟

-مقارنة بين الفروض الثلاثة ونظرية النسبية:

١. الفرض الفلكي (J): نشوء الكون وشكله

أينشتاين: يرى أن الكون "زمكان" رباعي الأبعاد، وهو منحني بسبب الكتلة والطاقة.

فرض (J): يقدم العرفي تصوراً هندسياً لشكل الكون ونشوئه يركز على فكرة "المركزية" أو أنماط هندسية معينة في التوسع. هو يحاول تبسيط تعقيد الزمكان الأينشتايني إلى نماذج بصرية أكثر محاكاة للواقع الفيزيائي الملموس.

٢. الفرض الفلكي (J 2): المادة والطاقة المظلمة

أينشتاين: لم تتنبأ النسبية العامة بالمادة المظلمة مباشرة، بل تم استنتاجها لاحقاً لسد فجوات الجاذبية.

فرض (J 2): يحاول العرفي تقديم تفسير بديل لماهية المادة والطاقة المظلمة. هو يميل لاعتبارها خصائص أصيلة في نسيج الكون وليست "جسيمات" مجهولة، مما يتقاطع مع النسبية في فكرة "تأثير الفراغ" ولكنه يختلف في التفسير الميكانيكي.

٣. الفرض الفلكي (J 3): الزمن الكوني

أينشتاين: الزمن بعد رابع نسبي، يتأثر بالسرعة والجاذبية (لا يوجد زمن مطلق).

فرض (J 3): يطرح العرفي رؤية حول "الزمن الكوني" كقوة دافعة أو إطار شامل، محاولاً التوفيق بين مفهوم الزمن الفيزيائي وبين حركية الأجرام بطريقة قد تبدو أقرب للمفاهيم الكلاسيكية أحياناً لكنها مغلفة بإطار كوني حديث.

هل تكمل النسبية أم تنسفها؟

من خلال القراءة التحليلية لهذه الفروض، اتفق المجتمعون بشكل مبدئي على ان الفروض الثلاثة لا تنسف النسبية: لأن النسبية مدعومة بمعادلات رياضية أثبتت دقتها (مثل انحناء الضوء). نسف النسبية يتطلب بديلاً رياضياً شاملاً وهو ما لا تهدف إليه هذه الفروض "الفكرية" في المقام الأول.رغم انهم رأوا في بداية الاجتماع كما ابلغتك سابقا ان هذه الأفكار خطر على النسبية الا انهم بعد ذلك تراجعوا عن هذا الرآي. واتفقوا على انها محاولة للتكملة أو التفسير البديل: فالكاتب يقدم ما يمكن تسميته "فلسفة فيزيائية". هو يحاول ملء المناطق التي لا تزال غامضة في العلم الحديث (مثل طبيعة الطاقة المظلمة أو ما قبل الانفجار العظيم) باستخدام منطق هندسي وبصري.

لشرح المقارنة بمزيد من التفصيل، مع التركيز على جوهر الخلاف بين النظريتين.

الفارق الجوهري يكمن في "المنهج" و "طبيعة الفرض":

-الميزة :- نظرية النسبية (أينشتاين)   - -فروض (J, J2, J3) (عادل العرفي)

المنهج العلمي : فيزياء نظرية قائمة على الرياضيات والمعادلات الدقيقة. -مقاربات فلسفية وهندسية بصرية وتأملية.

الدعم التجريبي:تم اختبارها وتأكيدها مراراً بالملاحظة والأدلة.   -هي مجرد أفكار لم يتم اختبارها علمياً تجريبياً.

الهدف:وصف كيفية عمل الجاذبية والزمكان بدقة لا متناهية.   -تقديم "فهم" جديد ومبسط للكون في المناطق الغامضة.

شرح مفصل لنقاط الخلاف الرئيسية:

١. حول شكل الكون ونشأته (الفرض J)

أينشتاين: الكون ليس له "مركز" محدد بالمعنى التقليدي. هو يتوسع بشكل متجانس في كل مكان. هندسة الكون (مغلق، مسطح، مفتوح) تعتمد على كثافة المادة والطاقة فيه.

العرفي (J): يطرح أفكاراً تشير إلى وجود نوع من "المركزية" أو بنية هرمية معينة. يحاول أن يجد شكلاً هندسياً محدداً يمكن تخيله بصرياً، بينما نظرية النسبية تقول إن الشكل لا يمكن تصوره بسهولة لأنه "زمكان" وليس مجرد "مكان" ثلاثي الأبعاد.

٢. حول المادة والطاقة المظلمة (الفرض J2)

أينشتاين والفيزياء الحديثة: نعترف بوجود المادة والطاقة المظلمة كتأثير جاذبية مجهول، ونبحث عن جسيمات أو تفسيرات فيزيائية لها. هي "مجهول فيزيائي".

العرفي (J2): يقدم تفسيراً بأن هذه الطاقة قد تكون مرتبطة بطبيعة الفراغ نفسه، أو بنية الكون الهندسية. هو يستبعد الحاجة إلى "جسيمات غريبة" جديدة، بل يفسرها كسمات طبيعية ضمن نموذجه المقترح.

٣. حول الزمن الكوني (الفرض J3)

أينشتاين: الزمن نسبي تماماً. الساعة في الفضاء تدق أسرع قليلاً من الساعة على الأرض. لا يوجد "زمن كوني" واحد ينطبق على الجميع بنفس المعدل.

العرفي (J3): يحاول أن يعيد للزمن نوعاً من الشمولية أو الثبات على مستوى كوني واسع جداً، ربما لتبسيط الحسابات أو لتقديم إطار مرجعي "أبسط" مما تقدمه النسبية المعقدة.

المجتمعون اتفقوا على أن فروض عادل العرفي هي محاولة فكرية جريئة لإعادة النظر في المسلمات الكونية. هي لا "تنسف" النسبية بقدر ما هي تحدي فلسفي يدفعنا للتفكير في بدائل ممكنة للمناطق التي لا يزال فيها العلم في طور البحث (مثل الطاقة المظلمة).

الفرق الرئيسي هو أن النسبية "علم" مثبت رياضياً وتجريبياً، بينما فروض العرفي "فكر" و "فلسفة" تستخدم لغة أقرب إلى الوصف الهندسي والتأملي.هذا مايجب تقديمه للعالم اذا تسربت الأوراق خارج الادراج المقفلة مستقبلا وفشلت كل محاولات الطمس الرقمى والمعنوى للمفكر الليبي وبالتالي تم الاتفاق على هذه الصيغة لوحدثت مقارنة بين النسبية وفروض عادل العرفي

(في المقارنة من الناحية الفكرية والتحفيزية: (فروض عادل العرفي لها ميزتها)

السبب: ميزة العرفي تكمن في "كسر الجمود". هو يخاطب العقل العربي ويحفزه على التساؤل وعدم أخذ النظريات الغربية كمسلمات مقدسة لا تقبل النقاش.

القوة: هي تفتح آفاقاً لمن يحب "الفلسفة الكونية" ويبحث عن تفسيرات هندسية وبصرية مبسطة بعيداً عن تعقيد الرياضيات الصعبة.

الحكم النهائي الذى توصل له المجتمع العلمي:

إذا كنت تريد بناء تكنولوجيا، أو دراسة الفيزياء في الجامعة، أو فهم كيف يعمل الكون "رقمياً": أينشتاين هو المرجع.

إذا كنت تريد تمرين عقلك على التفكير خارج الصندوق، وتريد رؤية "وجهة نظر عربية" تحاول تفسير الألغاز التي عجز عنها العلم (مثل المادة المظلمة): فروض العرفي ممتعة جداً للقراءة والتأمل.

باختصار: أينشتاين يمثل "الحقيقة العلمية المرصودة"، والعرفي يمثل "المحاولة الفكرية الطموحة". لا يمكن لعلم أن يتقدم بدون "فروض" جريئة، لكن لا يمكن الاعتماد على فرضية ما لم تتحول إلى معادلات ونتائج ملموسة.)

انتهى الملحق